Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

90-8-84

❀ श्रीये नमः ❀

ते वाक्य करणान्मृताहे भूरि भोजनम् ।
यां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता ॥

श्री विष्णु गदाधर

॥ गया श्राद्ध पद्धतिः ॥

देवर्षि पितृ-तर्पण, पितृषोड़शी सहित

संग्रहकर्त्ता :

गयामण्डलान्तर्गत
हसोद नगर (हरि नगर)
दो आल ग्राम वास्तव्यः
श्रीमाधवाचार्यः

श्री मानदीप मिश्रः

साहित्याचार्यः, पो० रत्न संस्कृताध्यापकः
वि० मो० मा० वार्ड विद्यालय, गया ।

सहायकः

श्री विद्यानन्दन द्विवेदी सा० शास्त्र

मुद्रक :

श्री महेशचन्द्र शुक्ल, मगध शुभंकर प्रेस, रामसागर नयी सड़क, गया ।

पंचम संस्करण, सम्वत् २०२५]

[मूल्यम्—६० नये पैसे

सैकेन्ड

Digitized by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

गया के पिण्ड स्थान (वेदी) का नाम :

१४ पुनः पुना (पांवपूजा श्राद्ध)
१५ फल्गु (पांवपूजा खीर से श्राद्ध)
१ ब्रह्मकुण्ड
प्रेतशिला
रामकुण्ड
रामशिला
काकबलि
२ उत्तरमानस
उदीची
कनखल
दक्षिण मानस
जिह्वालोल
गदाधर जी का पंचामृत स्नान
३ सरस्वती (पञ्चरत्न दान तर्पण)
मातङ्गवापी
धर्मारण्य
बोधगया केचित् श्राद्धम्
४ ब्रह्म सरोवर
काकबलि, आम्रसेचन
५ रुद्रपद
विष्णुपद (पांवपूजा खीरश्राद्ध)
ब्रह्मपद
कार्तिकपद
६ दक्षिणाग्नि पद
गार्हपत्याग्नि
आहवनीयाग्नि
सूर्यपद
चन्द्रपद
७ गणेशपद
सभ्याग्निपद, आवस्थ्याग्निपद
दधिचिपद
कण्वपद
८ मातंगपद
क्रौञ्चपद
इन्द्रपद
अगस्त्यपद
कश्यपपद
गजकर्ण दूधतर्पण अन्नदान
९ रामगया
सीताकुण्ड सौभाग्यदान
(पांवपूजा-बालू का पिण्ड
१० गयाशिर
गयाकूप
११ मुण्डपृष्ठा
आदि गया खोवा श्राद्ध
धौतपद
१२ भीम गया
गोप्रचार
गदालोल पवित्री दान
१३ फल्गु दूध तर्पण
१४ वैतरनी गोदान पांवपूजा
१५ अक्षयवट खीर श्राद्ध
शय्यादान सुफल
१ गायत्रीघाट दधि चावल
पिण्ड से श्राद्ध
आचार्य दक्षिणा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

❀ श्री विष्णुवे नमः ❀

शास्त्रोक्तवृहत्—

—: गया श्राद्ध पद्धति :—

रामानुज पदंध्यात्वा, नत्वा देवं गदाधरम्।
लिख्येत मानदीपेन गया श्राद्धस्य पद्धतिः ॥ १

फल्गु तीर्थ पर जाकर नीचे लिखे मंत्र से तीर्थों का आवाहन करें :—

कुरु क्षेत्र गया गंगा, प्रभासं, पुष्करणि च।
तीर्थान्येतानि पुण्यानि, स्नान काले भवन्तिह ॥

पुनः निम्नोक्त मंत्र से हाथ में तुलसी द्रव्यादि लेकर संकल्प करें :—

ॐ विष्णुः ३ इत्यादि कहकर अमुक योत्र अमुक शर्म्मा, वर्मा, गुप्तः, दासो, वा सवत्नी कोऽहं सहस्त्राश्वमेध जन्य सम फल प्राप्तिकामः फल्गुतीर्थे पुण्य जले स्नानं करिष्ये।

प्रार्थना—फल्गुतीर्थे पुण्य जले करोमि स्नानमादृतः। पितृणां विष्णु लोकाय भुक्ति मुक्ति प्रसिद्धये ॥ ॐ फल्गु सरितः श्रेष्ठ सर्व पाप प्रणाशनः, बाले वृद्धे कृतं पापं हरमेति फल्गुदकम ॥

नीचे लीखे मन्त्र से फल्गु नदी से बालू लेकर मस्तक में लगाकर स्नान करें

ॐ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे मृति के हरमे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शुद्ध वस्त्र धारन कर नीचे लिखे मन्त्र से पवित्री धारण करें।

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुना-म्यच्छिद्रेण पवित्रेणसूर्यस्यरश्मिभिः तस्यते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ।

पश्चात् प्राणायाम कर इस मन्त्र से माथे पर तथा सामान पर जल से मार्जन करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा यःस्मरेन्पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरःशुचिः ॥

संकल्पः—ॐ विष्णुः३ ॐ तत्सदद्य श्रीमद्भगवतो महा पुरुषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेत वाराह कल्पे सप्तमे वैवस्वत मन्वंतरे अष्टा विंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बू-द्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तैक देशान्तर्गते पुण्य गया क्षेत्रे बौद्धावतारे विक्रम सम्वत्सरे अमुक संख्या के अमुक नाम्नि सम्वत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुक-मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुक नामाहं श्रीमन्नारायण प्रीत्यर्थं फल्गु तीर्थे पुण्यजले देवर्षि पितृतर्पणं करिष्ये ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तर्पण—यज्ञोपवीत सव्य से पूरब की ओर देवताओं को एक-एक अंजुली जल चावल और कुश से इस मंत्र से दें।

(ॐ ब्रह्मादयोदेवा आगच्छन्तु गृहणत्वेतांजलां-जलीन्)। ॐ ब्रह्मा-तृप्यताम् ओं विष्णुःतृ० ओं रुद्र तृ० ओं प्रजापतिःतृ० ओं देवाःतृप्यंताम्० ओं छन्दःतृ० ओं ऋषयःतृ० ओं पुराणाचार्य्याःतृ० ओं इतराचार्य्यातृ० ओं गंधर्वाःतृ० ओं संबत्सराः सावयवाःतृ० ओं देव्यःतृ० ओं अपसरसःतृ० ओं देवानुगाःतृ० ओं नागाःतृ० ओं सागराःतृ० ओं पर्वताःतृ० ओंसरितःतृ० ओं मनुष्याःतृ० ओं यक्षाःतृ० ओं रक्षांसितृ० ओंपिशाचाःतृ० ओंसुराःतृ० ओं भूतानिःतृ० ओं पशवःतृ० ओं वनस्पतयःतृ० ओं औषधयःतृ० ॐ भूत-ग्रामचतुर्विधाःतृ०।

जनेउ अंगोछा कण्ठी के समान कर उत्तर की ओर दिव्य मनुष्यों को दो २ अञ्जुली जल कुशा और जल से इस मंत्र से दें।

ॐ सनकादयः सप्तमनुष्याआगच्छन्तुगृहणत्वेताञ्जलाञ्जलीन्॥

ॐ सनकस्तृप्यताम्। ॐ सनन्दनस्तृ०। ॐ सनातनस्तृ० ओंकपिलस्तृ ओं आसुरिस्तृ! ओं बोढुस्तृ। ओं पंचशिखस्तृ०॥

पुनः पूरब की ओर सव्य होकर चावल से जल दें।

ओंमरीचादयः आगच्छन्तुगृहणंत्वेतांजलांजलीन्। ॐ मरीचिःतृप्य-ताम् ओं अत्रिःतृ० ओं आंगिराःतृ० ओंपुलस्त्य तृ० ओं पुलहःतृ० ओंक्रतुःतृ ओं प्रचेतःतृ० ओं वशिष्ठःतृ० ओं भृगुःतृ० ओं नारदःतृ०।

दक्षिण तरफ मुख कर अपसव्य होकर तीन २ अंजुली तिल से निम्नोक्त दिव्य पितरों को जल दें।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

❀ अथ तीर्थ श्राद्ध विधि ❀

आसनं पिण्ड दानं च पुनः प्रेत्यवनेजनम् ।
दक्षिणा चान्न संकल्पस्तीर्थे श्राद्धेष्वयं विधिः ॥
अर्घ्यमावाहनं चैव द्विजाङ्गुष्ठ निवेशनम् ।
तृप्तिप्रश्नं च विकिरं तीर्थे पञ्च विवर्जयेत् ॥

अपिच गयायामीशानादि पदेषु रेखा करणं अङ्गार भ्रमण नास्ति ॥ (भाद्रौ पद्म पुराणेच) ।

अथ श्राद्ध प्रयोगः

श्राद्ध करने के लिये श्राद्ध स्थान में आकर शुद्ध आशन पर बैठ कर निम्नलिखित मन्त्र से पवित्री धारण करें—

ओं पवित्रे स्थो वैष्णव्यो-इत्यादि (पूर्ववत पृष्ठ सं० १ देखिये)

पश्चात् प्राणायाम कर माथे पर तथा श्राद्ध सामग्रियों पर जल से मार्जन करें। ओं अपवित्रः पवित्रोवा इत्यादि से।

नीचे के मन्त्र से तीर्थ को ध्यान करें।

श्राद्ध रम्भे गयांध्यात्वा, ध्यात्वा देवं गदाधरम् ।
तत्रैवां चैव नमस्कृत्य ततः श्राद्धं समाचरेत् ॥

इति जोड़ कर ओं हरये नमः । ओं गयायै नमः । ओं गदाधराय नमः । (यव पुष्प से) श्राद्ध भूम्यै नमः ३ ।

पञ्च क्रोशं गया क्षेत्रं क्रोशमेकं गया शिरः ।
यत्रतत्र स्मरिष्यामि पितृणां दत्तमक्षयम् ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पीले सरसों से इस मन्त्र को पढ़ कर दिग् रक्षण करें—

पूर्वे नारायणो देवो दक्षिणे मधुसूदनः ।
पश्चिमे वामनो देव ह्युत्तरे च गदाधरः ॥
ऊर्ध्वं तु पुण्डरीकाक्षो ह्यधस्ताद्विष्णु देवता ।
सर्वतश्चाधिषो देवो यमो रक्षां करोतु मे ॥

तिल कुशा से निवी बन्धन करें।

कर्म पात्र को कुशा पर रख कर तीर्थ के जल से भर कर गंध पुष्प, तिल, यव, देकर कुशा से नीचे के मन्त्र से आलोडन करें।

वरो वरेण्यो वरदो वराहो धरणीधरः,
आयातु कर्मपात्रेऽस्मिन् सर्वदित्तु भयापहः ॥

कर्म पात्र को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करें—

ओं यद्देवा देव हेडनं देवा सश्च कृमा वयम् ।
अग्निर्मातस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्व हसः ॥
ओं यदि दिवा यदि नक्त मेना ँ सि च कृमा वयम्
वायुर्मा तस्मा देन सो विश्वान् मुञ्चत्वं हसः ।
यदि जाग्रद्यदि स्वप्न ऽएना ँ सि च कृमा वयम् ॥
सूर्य्योमा तस्मा देन सो विश्वान् मुञ्चत्व हसः ।

कर्म पात्र से कुशा से जल लेकर यजमान अपने शरीर पर नीचे के मन्त्र से मार्जन करें।

ओं आपो हिष्ठा मयो भुवस्ता न ऽ उर्जे दधातनः ।
महेरणाय चक्षसे ओं यो वः शिव तमोरस स्तस्य भाजयतेहनः ।
उशती रि व मातरः । ओं तस्मा ऽ अरङ्ग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
आपो जनयथा चनः ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रक्खा दीप रख कर हाथ में जल अक्षत फल द्रव्य लेकर पृ० १ में लिखित मंत्र से संकल्प करें।

ॐ विष्णुः ३ तत्सदद्य.....अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक गोत्रः, अमुकशर्म्मा, वर्म्मा, गुप्तः, दासोवा-अहं अमुक गोत्राणांपितृः पितामह प्र पितामहानां यथा संभवं स पत्नीकानां द्वितीय गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहानां यथा संभव स पत्नीकानां अमुकामुक शर्मणां, वर्मणां, गुप्तानां, दासानामन्येषां। पितृणां-च फल्गु तीर्थे पार्वणश्राद्ध विधिना तीर्थ श्राद्धं करिष्ये।

पितृ गायत्री तीन बार जपें—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महा योगीभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

उत्तर की ओर मुंह कर आशन पर बैठकर पितृ पक्ष के विश्वदेव के लिये आशन दान करें।

त्रिकुश यव जल लेकर सव्य से— अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्र पितामहानां अमुकामुक शर्मणां यथा संभवं सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरुपाणां फल्गुतीर्थे पार्वण श्राद्ध संबंधिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः। ततः अप सव्य से दक्षिण की ओर मुंह कर त्रिकुश तिल लेकर अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुकामुक शर्मणां यथा संभवं सपत्नी-कानां वसु रुद्रादित्य स्वरुपाणां फल्गु तीर्थे पार्वणश्राद्ध इदमासनं वः स्वधा

सव्य से उत्तर की ओर मुंह कर मातामह पक्ष के विश्वदेव के आशन संकल्प करें—(यव जल लेकर) अद्यामुक गोत्राणां मातामह, प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहानाम् अमुकामुक शर्मणां यथा संभवं सपत्नीकानां अग्नि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वरुणादित्य स्वरूपाणां फल्गु तीर्थे पार्वणश्राद्ध संबंधिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः।

ततः अपसव्य होकर दक्षिण की ओर मुंहकर मातमहादि के लिए आशन संकल्प करें त्रिकुश तिल जल लेकर—

अद्यद्वितीय गोत्राणः माताभह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानाम्-अग्नि वरुणादित्यस्वरूपाणां यथा संभवं सपत्नीकानां फल्गु तीर्थे पार्वण श्राद्धे इदमासनं वः स्वधा।

सव्य होकर उत्तर की ओर मुंह कर विश्वदेव को गंधादि देकर यव जल लेकर सकल्प करें—

अद्यअमुक गोत्राणां पितृपितामह प्रपितामहानां वसुरुद्रादित्य स्वरुपाणां अमुकामुक शर्मणां सपत्नीकानां फल्गु तीर्थे पार्वण श्राद्ध संबन्धिनो विश्वेदेवाएतानि गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल यज्ञोपवीत वासांसि वो नमः।

अपसव्य से दक्षिण की ओर मुंहकर पितरों को गन्धादि देकर त्रिकुश तिल जल लेकर संकल्प करें—

अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानां यथा संभवं सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरुपाणाम्-अमुकामुक शर्मणां फल्गु तीर्थे पार्वणश्राद्धे एतानि गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल यज्ञोपवित वासांसि वः स्वधा।

पुनः सव्य से उत्तर की ओर मुंहकर मातामहपक्ष के विश्वदेव को गंधादि देकर यव जल लेकर संकल्प करें—

द्वितीय गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां यथा संभवं स पत्नीकानाम्-अमुकामुक शर्मणां फल्गु तीर्थे पावण श्राद्ध संबन्धिनो विश्वेदेवा एतानि गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल यज्ञोपवित वासांसि वो नमः

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अपसव्य से दक्षिण की ओर मुंहकर त्रिकुश तील जल लेकर माता-महादि को गंधादि देकर संकल्प करें—

द्वितीय गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां यथा संभवं सपत्नीकानाम्-अमुकामुक शर्म्मणां फल्गु तीर्थे पार्वण श्राद्धे एतानि गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल यज्ञोपवित वासांसि वः स्वधा।

ततः सव्य से जल लेकर चतुरस्र मण्डलकरण करें—

मन्त्रः—यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डल तोयन्तु सर्व भूतानि रक्षतु।

इसके बाद "अग्नौकरण" पूर्व की ओर एक दोनी में जल रख कर श्राधान्न से सव्य हो कर उसमें दो आहुतियां दें।

ॐ अग्नये कव्य वाहनायस्वाहा १। ॐ सोमाय पितृ मते स्वाहा २।

इसके बाद भूस्वामी को दक्षिण में कुशा पर अन्न दें इदमन्नं एतद् भूस्वामी पितृभ्यो नमः।

हवन से बचा हूआ अन्न जल घृत मधु सव्यसे देव पात्रों में अपसव्य से पितृ पात्रों में देकर नीचे के मन्त्रों को पढें।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्तोषधीः मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्यार्थिव रजः मधुद्यौस्तुनः पिता मधुमानो बनस्पतिर्मधु-माँ २ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तुनः। ओम् मधु ३

सव्य से संकल्प करें यव जल लेकर—

अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानाम्-अमुकामुक शर्म्मणां

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यथा संभवं सपत्नीकानां पार्वणश्राद्ध संबन्धिनो विश्वेदेवा एतदन्नं सोपकरणं वो नमः। प्रार्थना

अन्न हीनं क्रिया हीनं विधि हीनं चयद्भवेत्।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु।

अपसव्य से त्रिकुश तील जल लेकर संकल्प करें—

अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानाम्-अमुकामुक शर्मणां यथा संभवं सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां फल्गुतीर्थे पार्वण श्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं युष्मभ्यंस्वधा। प्रार्थना—अन्न हीनं क्रियाहीन.....से।

पुनः सव्य से यव जल लेकर सकल्प करें—

द्वितीय गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां फल्गु तीर्थे पार्वण श्राद्ध संबंधिनो विश्वेदेवा एतदोन्नं सोपकरणं नमः। प्रार्थना—अन्न हीनं क्रियाहीनम्.....से।

अपसव्य से त्रिकुश तील जल लेकर संकल्प करें—

द्वितीय गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानाम् अग्नि वरूणादित्य स्वरूपाणां फल्गु तीर्थे पार्वण श्राद्धे-इदमन्नं सोपकरणं युष्मभ्यं स्वधा।

ततः सव्य होकर प्रार्थना—अन्नहीनं क्रियाहीनं.....। इसके पश्चात ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च इत्यादि को तीन बार जप कर मधुवाता जपें। पश्चात् ॐ कृष्णुष्व पाजः इत्यादि, पुरुषसुक्त १६ मन्त्र, तथा आशुःसिशान इत्यादि मन्त्रों को पाठ करें।

ततः—कुरूक्षेत्र गया गंगा प्रभासं पुष्करणि च।
तीर्थान्येतानि नामाने श्राद्धकाले भवन्त्विह॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पश्चात् पिण्ड देने के लिए वेदी बनाकर उसपर मूलरहित चार त्रीकुशों को बिछाकर, त्रिकुश, तील, जल लेकर—हाथ में पिण्डासन संकल्प करें।

ॐ अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे तीर्थश्राद्धे अमुक गोत्राः पितृपितामह प्रपितामहाः द्वितीय गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः यथासंभवं सपत्नीकानां इमानि पिण्डासनानि पृथक२ विभज्य वः स्वधा।

पश्चात् प्रत्येक पिण्डासन पर तीन २ जगह पितरों को निम्नोक्त संकल्प से अवनेजन दें।

ॐ अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे तीर्थश्राद्धे अमुक गोत्राः पितृपितामह प्रपितामहाः वसुरूद्रादित्य स्वरूपाः सपत्नीकानां द्वितीय गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः यथसंभव सपत्नीकानां अत्र पिण्ड स्थाने पृथक२ विभज्य अवनेजनं निग्ध्वम् वः स्वधा।

विद्वान लोग एकवचन से अवनेजन दें।

॥ अथ पिण्डदानम् ॥

अपसव्य हो बायां ठेहुना गिराकर मोटक जल के साथ पिण्ड लेकर नीचे लिखे संकल्प से पिण्डदान करें।

ॐ अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे पार्वण विधि तीर्थश्राद्धे अमुक गोत्र अस्मद् पितः अमुक शर्मन् वसुरुप एषते पिण्डः स्वधा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ॐ अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे पार्वण विधि तीर्थश्राद्धे अमुक गोत्र अस्मद् पितामह अमुक शर्मन् रुद्र एषतेपिण्डः स्वधा ।

ॐ अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे पार्वण विधि तिर्थश्राद्धे अमुक गोत्र, अस्मद् प्रपितामह अमुक शर्मन आदित्य रूप एषते पिण्डः स्वधा ।

ॐ अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे पार्वण विधि तीर्थ श्राद्धे अमुक गोत्रे अस्मन् मातः अमुकि देवि गायत्री रूपे एषतेपिण्डः स्वधा ।

ॐ अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे पार्वण विधि तीर्थ श्राद्धे अमुक गोत्रे अस्मद् पितामहि अमुकि देवि सावित्री रूपे एषतेपिण्डः स्वधा ।

ॐ अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे पार्वण विधि तीर्थ श्राद्धे अमुक गोत्रे अस्मद प्रपितामहि अमुकि देवि सरस्वति रूपे एषतेपिण्डः स्वधा ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ॐ अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे पार्वण विधि तीर्थ श्राद्धे अमुक गोत्रे अस्मन् मातामह अमुक शर्मन् अग्नि रूप एषतेपिण्डः स्वधा ।

ॐ अथ गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे पार्वण बिधि तीर्थ श्राद्धे अमुक गोत्र अस्मद् प्रमातामह अमुक शर्मन वरुण रूप एषतेपिण्डः स्वधा ।

ॐ अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे पार्वण विधि तीर्थ श्राद्धे अमुक गोत्र अस्मद् वृद्ध प्रमातामह अमुक शर्मन् आदित्य रूप एषतेपिण्डः स्वधा ।

ऊँ अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे पार्वण विधि तीर्थ श्राद्धे अमुक गोत्रे अस्मन् मातामहि अमुकि देवि एषतेपिण्डः स्वधा ।

ओं अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे पार्वण विधि तीर्थ श्राद्धे अमुक गोत्रे अस्मद् प्रमातामहि अमुकि देवि एषते पिण्डः स्वधा ।

ओं अद्य गयायां गयाशिरसि फल्गु तीर्थे पार्वण वीधि श्राद्धे अमुक गोत्रे अस्मद् वृद्ध प्रमातामही अमुकी देवी एषते पोण्डः स्वधा ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

। कुशा से पिण्ड पर हाथ पोछना चाहिये इस मन्त्र से—

कर लेप भाग भुजस्तृप्यन्तु

अन्त में कुशासन रखकर नीचे के मन्त्र से शेष पितरों का ध्यान कर उनका पिण्डदान करें।

कव्यवाडोऽनलः सोमो यमश्चैवार्यमास्तथा। अग्निष्वात्ता कर्हिषदः सोमपाः पितृदेवताः। आगच्छन्तु महाभागा युष्मामी रक्षिता-स्विह। मदीयाः पितरो ये च कुले जाता सनाभयः। तेषां पिण्ड-प्रदानार्थमागतोऽस्मि गयामिमाम्। ते सर्वे तृप्तिमायाँतु श्राद्धं नाऽनेन शाश्वतीम्। इत्यावाहनम्। ओं पित्रादिभ्यो नमः सम्पूज्य। मोट-तिल-जलान्यादाय ॥ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृ-मानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥ अतीतः कुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ॥ आब्रह्मभुवनाल्लोकानिदमस्तु तिलोदकम् ॥ इति कुशोपरि तिलाञ्जलिदानम्। तिल जल घी दही मधु से बनाकर १२ पित्रों को एक २ पिण्ड इस मन्त्र से दें।

पिता-पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥ माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही ॥ मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः। तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥ कुशासन रखकर पितृषोडशी के लिये पितरों का ध्यान करें इस मन्त्र से—

कव्यवाडोऽनलः सोमो यमश्चवार्यमास्तथा ॥ अग्निष्वाता वर्हिषदः सोमपाः पितृदेवताः ॥ आगच्छन्तु महाभाग युष्माभी रक्षिता-स्विह ॥ मदीयाः पितरो ये च कुले जाताः सनाभयाः ॥ तेषां पिण्डप्रदानार्थमागतोऽस्मि गयामिमाम् ॥ सर्वे ते तृप्तिमायान्तु

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

श्राद्धेनाऽनेन शाश्वतीम् ॥ अस्मत्कुले मृतायेचगतिर्येषां न विद्यते । आवाहयिष्ये तान् सर्वान् कुशपृष्ठे तिलोदकैः ॥ मातामहकुले ये च गतिर्येषां न विद्यते ॥ आवाहयिष्ये तान् सर्वान् कुशपृष्ठे तिलोदकैः ॥ बन्धुवर्गकुले ये च गतिर्येषां न विद्यते ॥ आवाहयिष्ये तान् सर्वान् कुशपृष्ठे तिलोदकैः । पित्रादिभ्यो नमः ।

पूजन कर मोटक, तिल, जल लेकर कुशासन पर तिल जल दें इस मन्त्र से ।

ओं अत्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षि-पितृ-मानवाः । तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः । अतीतः कुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् । आब्रह्म-भुवनाँल्लोकानिदमस्तु तिलोदकम् ।

मोटक तिल जल पिण्ड लेकर एक-एक पिण्ड इन मन्त्रों से दें ।

अस्मतकुले मृता ये च गतिर्येषां न विद्यते । तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् । मातामहकुले ये च० तेषां० । बन्धुवर्गकुले तेषां० । ओं अजातदन्ता ये केचिद् ये च गर्भे प्रपीड़िताः तेषां० । ओं अग्नि-दग्धाश्च ये केचिन्नाग्निदग्धास्तथाऽपरे ॥ विद्युद्धौरहता ये च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् दावदाहे मृता ये च सिंहव्याघ्रहताश्च ये । द्रष्ट्रिभिः शृंङ्गिभिर्वाऽपि तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् । उद्बन्धनमृता ये च विषशस्त्र-हताश्च ये । आत्मोपघातिनो ये च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम । अरण्ये बत्मनि वने क्षुत्तृड्भ्यां वाऽपि ये हताः । भूत-प्रेत-पिशाचाश्च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् । रौरवे चाऽन्धतामिस्रे कालसूत्रे क्षयेमृताः । तेषा-मुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् । अनेकयातनासंस्थाः प्रतलोक च ये गताः । तेषामुद्धर—। असीपत्रवने घोरे कुम्भीपाके च ये स्थिताः ॥ तेषामुद्धर० ॥ नरकेषु समस्तेषु यातनासुच ये स्थिताः ॥ तेषामुद्धर० ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पशुयोनिगता ये च पक्षिकीटसरीसृपाः। तिर्यग्योनिगता ये च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्। जात्यन्तरसहस्रेषु भ्रमन्ति स्वेन कर्मणा। मानुष्यं दुर्लभं येषां तेभ्यः पिण्डं०। दिव्यन्तरिक्षभूमिष्ठाः पितरो बान्धवादयः। असंस्कृता मृता ये च तेभ्यः पिण्डं०। ये केचित् प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु पिण्डदानेन सर्वदा। येऽबान्धवा बान्धवा वा ह्यन्यजन्मनि बान्धवाः। तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम्। पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे च ये मृताः। गुरु-श्वसुर बन्धूनां ये चाऽन्ये बांधवाः मृताः। ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्र-दारविवर्जिताः। क्रिया-लोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा। विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताऽज्ञाताः कुले मम। तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम्।

नीचे के तीनों श्लोकों से एक पिण्ड दें।

आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः। कुलद्वये-ऽस्मिन् मम संगताश्च भृत्यास्तथैवाऽश्रितसेवकाश्च। मित्राणि सख्यः पशवश्च वृक्षाः स्पृष्टाश्च दृष्टाश्च कृतोपकाराः। जन्मान्तरे ये मम संग-ताश्च तेभ्यः स्वधा पिण्डमह ददामि।

दूसरा कुशा रखकर इस मंत्र से एक पिण्ड दें।

यो मे प्रजां नाशयति जीवन्तः स्यन्ति वा स्वयम्। तस्मै प्रेताय दत्तो मे पिण्डोऽयमुपतिष्ठताम्।

पुनः कुशा रखकर इस मन्त्र से एक पिण्ड दें।

उच्छिन्नकुलवंशानां येषां दाता कुले न हि। धर्मपिण्डो मयादत्तो ह्यक्षय्यामुपतिष्ठताम्।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

॥ अथ मातृ षोडशी ॥

कुशासन बिछाकर मोटक, तिल जल लेकर नीचे के मंत्र से माता का आवाहन ध्यान कर पिण्ड दें।

आगर्भज्ञानपर्यन्त पालितोऽस्मि यया त्विह। आवाहयामि तां मातः। कुशपृष्ठे तिलोदकैः। मोटक-तिल-जल-पिण्ड लेकर। गर्भस्य धारणे दुखं विषमे भूमिवर्त्मनि। तस्य निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्। यावत्पुत्रो न भवति तावन्मातुश्चाचन्तनम् तस्य। मासि मासि कृतं कष्ट वेदना प्रसवेषु च। तस्य। सम्पूर्णे दशमे मासि अत्यन्तं मातृ-पीन्डनम्। तस्य निष्क्रमणार्थाय। मातृपिण्डं ददाम्यहम्। शैथिल्यं प्रसव प्राप्ते माता विदन्ति दुष्करम्। तस्य निष्क्रमणा०। पद्भ्यां तु जनयेत् पुत्रो जनन्याः परिवेदनम्। तस्य नि०। अग्निना शोषयेद्देहं त्रिरात्रोपोषणं च यत्। तस्य नि०। पपौ या कटुद्रव्याणि काथानि विविधानि च। तस्य०। अहर्निशं तु यन्मातुः स्तनपीडां ददाम्यहम्। तस्य नि०। रात्रौ मूत्रपुरीषाभ्यां भिद्यते मातृकर्पटौ। तस्य नि०। माघे मासि निदाघे च शिशिरातपदुःखिताः तस्य नि०। क्षुत्तृड्भ्यां व्याकुले पुत्रे यान्नं नीरं प्रयच्छति। तस्य नि०। पुत्र व्याधिसमायुक्ते शोकार्ता जननी च या। तस्य नि०। आल्पाहारी च या माता यावत्पुत्रोस्ति बालकः। तस्य नि०। गात्रभङ्गो भवेन्मातुर्मृत्युरेव। न संशयः। तस्य निष्क्रम०। यमद्वारे महाघोरे ख्याता वैतरणी नदी। तस्या उत्तरणार्थाय इमं पिण्डं।

पश्चात् आचमन कर पूरब मुख होकर भगवान का ध्यान करें दक्षिण मुख होकर अपसव्य से "ओं अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमा वृषायध्वम्" यह पढ़ कर बायां तरफ से उत्तर मुख हो स्वांस रोक कर समस्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पितरों का मध्यान करते हुए यह मंत्र पढ़ें।

ॐ अमीमदन्त पितरो यथा भागमा वृषायिषत्।

पुनः अपसव्य से ही यथा क्रम पिण्ड पर प्रत्यवनेजन नीचे के संकल्प से दें।

यथा अद्यामुक गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः वसुरुद्रादित्य रूपाः सपत्नीकाः यथा २ नामधेयाः फल्गु तिर्थे पार्वण विधि श्राद्धे पिण्डे प्रत्यवनेजनं निग्धूवंवः स्वधा।

अद्यामुक गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः यथा २ नामधेयाः फल्गु तीर्थे पार्वण श्राद्ध पिण्डे प्रत्यवनेजन निग्ध्वं वः स्वधा। अद्यामुक गोत्राः समस्त पित्रादयः गुरु श्वसुरादयः बान्धवाद्यश्च अत्र पार्वण श्राद्धपिण्डे प्रत्यवनेजनं निग्ध्व वः स्वधा।

विद्वान लोग एक वचन से प्रयवनेजन दं।

यथा-अद्यामुक गोत्रपितरमुकशर्मन् वसुरूप फल्गु तिर्थे पार्वण श्राद्ध पिण्डे प्रत्यवने जनं निक्वते स्वधा।

इसी प्रकार समस्त पितरों के एक वचन से प्रत्यवने जन दें।

नींवी खोलकर सव्य हो अचमन कर भगवान को स्मरण कर अपसव्य होकर दोनों हाथों से सूता लेकर पिण्ड पर रखें। मन्त्रः-ॐ नमो वः पितरा रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो वो गृहान्न पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मै तद्व पितरो वासः अवामुक गोत्राणां पितृ पितामहानां अमुकामुक शर्मणां वसु-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रुद्रादित्य स्वरूपाणां यथा सम्भवं सपत्नीकानां फल्गु तीर्थे पार्वण श्राद्धे पिण्डेषु एतद्वासांसि वः वा ।

इसी तरह माता महादि के पिंडा पर भी रखें।

ॐ शिवा आपः सन्तु जलम्। ॐ सौ मनस्यं पुष्पम्। ॐ अक्षतं चारिष्टं अस्तु अक्षतान्। इस मंत्र से पुष्प गंध दक्षिणादि भोजन पात्र पर दें। मोटक तिल जल लेकर संकल्प। आद्यमुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुकामुकशर्मणां यथा सम्भवं सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां फल्गु तीर्थे पार्वण श्राद्धे दत्तेत-दन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। इसी तरह माता महादि को भी दें। बाद सव्य से दक्षिण दिसा की ओर मुंह कर पिण्ड पर पूर्वाग्र जलधारा इस मंत्र से दें। मन्त्र—अधोरः। पितरः सन्तु। हाथ जोड़ कर पितरों से पूर्व मुख होकर प्रार्थना करें। ॐ गोत्रञ्नोवर्द्धतां दातारों नो भि वर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च श्रद्धा चनों माव्यगमद् बहुदेयञ्च नोऽस्तु अनञ्चनो बहु भवेदातिथींश्च लभे महियाचितारश्चनः सन्तु मा च याचिस्म कञ्चन। एता सत्याः आशिषः सन्तु। प्रार्थी कहें। सत्वेताः सत्याशिषः इसे आचार्य कहे। अपसव्य होकर पिण्ड पर कुशा रखकर दूध धारा या जलधारा दें। ओं उर्ज्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिश्रत। स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन्। पिण्ड पर इस मन्त्र से छाया करें। मन्त्र—अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका पुरीद्वारा वति ज्ञेयाः सप्तैताः मोक्ष दायिकाः। न तापूर्वक पिण्ड को सुंघकर उठाकर उसी जगह रख दें। पितरों को फिर मन्त्र से प्रणाम करें। पिता स्वर्गे पितार्धर्मः पितृहि परमंतपः पितरि प्रीतिमापन्ने प्रियन्ते सर्व देवता।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सव्य से विश्व देव के लिये दक्षिणा संकल्प करें।

ॐ अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुकामुक शर्मणां यथा संभव सपत्नीकानां वसूरुद्रादित्य स्वरूपाणां फल्गु तीर्थे पार्वण श्राद्ध संबंधिनां विश्वेषां देवानां कृतैतत्फल्गु तीर्थे पार्वण श्राद्ध प्रतिष्ठार्थं हिरण्यमग्नि दैवतं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। इसी तरह मातामहादी के श्राद्ध संबंधि विश्वदेव की दक्षिणा दें।

इसके बाद पितरों की दक्षिणा अपसव्य हो—मोटक तिल जल लेकर संकल्प करें—

अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितमहानां यथा सम्भव सपत्नीकानांमुकगोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामाहानां तथा अन्येषां पित्रादिनां गुरुश्वसुरादिनां बांधवादीनां फल्गु तीर्थे श्राद्ध प्रतिष्ठार्थे यथा परमितं द्रव्यं हिरण्यं वा यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। बाद। वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्राऽमृताऽ भृतज्ञाः। अस्य मधवः पिवत मादयध्वं तृप्तायात पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तुतेऽवन्त्वस्मान्। इस मंत्र से पितरों का विसर्जन करें। बाद देवताभ्यः तीन बार जपें। अपसव्य से रक्षादीप बुझा दें। सव्य हो हाथ पर धोकर पूर्व मुख हो इसे पढ़ें। प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताऽध्वरेषुयत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति-श्रुतिः।

इस श्लोक से प्रत्येक जगह भगवान से प्रार्थना करें।

साक्षिणः श्रन्तु मे देवा ब्रम्हेशानादयस्तथा।
मया गया सामुसाद्य पितृण निष्कृतिः कृता।

इति फल्गु तीर्थ श्राद्ध समाप्त।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसी तरह प्रत्येक तीर्थ स्थानो में तीर्थ श्राद्ध करना चाहिये। प्रत्येक तीर्थ के संकल्प में अमुक तीर्थ जन्य फल प्राप्तिपूर्वक पितृणां ब्रह्मलोक प्राप्त्यर्थं तीर्थ श्राद्धं करिष्ये।

प्रेतशिला पर एक बिशेष वस्तु का पिण्ड देना चाहिये। निम्नोक्त मंत्र से—इद पिण्डं शक्तुमयं मधुसर्पिः समन्वितं ददामि तस्मै प्रेतायय: पीडां कुरुतेमम। रामतीर्थ पर नमस्कार मंत्र। राम राम महाबाहो देवानामभयंकरें। नमस्करोमि देवत्वां पातकंमम नश्यतु। प्रभाशेषाय नमस्कार। आपस्त्वमसि देवेशज्योतिषां पतिरेव च। पापनाशय मे देव! मनोबाक्काय कर्मजम्। कागवली यमायैबर्यालिनमः। द्वौ श्वानौ श्यामशवलौ वैवश्वत कुलोद्भवौ ताभ्यांवलि प्रयच्छामि स्यातामेतावहिंसकौ। ततो काकोसि यमदूतोसिवायसोसि महाबली तुभ्यं वलि प्रदास्यामि गृह्ण यम किंकर। इति।

ततः उत्तरमानसे स्नानं करोम्यात्म विशुद्धये। सूर्य लोकादि संसिद्धिः सिद्धये पितृमुक्तये। उत्तरार्क नमस्कारम्। नमस्ते भानवे भर्त्रे सोम भोमज्ञरुपिण! जीव भार्गव सौरेय राहु केतु स्वरूपिणे। दक्षिण मानस प्रार्थना—दक्षिणे मानसे स्नानं करोम्यात्म विशुद्धये। सूर्यलोकादि संसिद्धिः सिद्धये पितुमुक्तये। ब्रह्म इत्यादि पापौघ पातकानां विशुद्धये। दिवाकर! करोमीह स्नानं दक्षिण मानसे। दक्षिणार्क नमस्कार। नमामि सूर्य तृप्त्यर्थं पितृणां तारणाय च। पुत्रपौत्र धनैश्वर्योऽऽयुष्यनैरुज्यसिद्धये। पितामह नमस्कार। ॐ नमः शिवाय देवाय ईसानपुरुषाय च। अघोर वास देवाय सद्योजाताय शम्भवे। गदाधर नमस्कार। ॐ नमस्ते वासुदेवाय नमः शंकर्षणाय च। प्रद्युम्नायऽनिरुद्धाय श्री धराय च विष्णवे। सरस्वती स्नान

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रार्थना, सरस्वती पुण्यजले करोमी स्नान तर्पणम्। पितृणां विष्णुलोकाय मुक्ति मुक्ति प्रसिद्धये। मतङ्गवापिमें। प्रमाणं देवता सन्तु लोकपालाश्च साक्षिणः। मयागत्य मतङ्गदेश पितृणां निस्कृतिः कृताः। महाबोधितरुं नमस्कार :– चलदलाय वृक्षाय सर्वदा स्थिति विष्णवे। बोधितत्वाय यज्ञाय अश्वत्थाय नमो नमः। एकादशोऽस्वरुद्राणां वसूनां पावकरतथा। नारायणोऽसि देवानां वृक्षराजोऽसि पिप्पल। अश्वस्थ यस्मात्वयि वृक्षराज नारायणः तिष्ठति सर्वकालम् अतः शुभस्त्वं सततं तरुणांधन्योऽसि दुःस्वप्न विनाशनोऽसि। अश्वत्थ रुपिणं देवं शंखचक्र बदाधरम्। नमामि पुण्डरीकाक्षं शंख रुप धरं हरिम्। बोधिरुप महावृक्षं नारायण मनः प्रियम्। गयायामागतस्याऽस्य पितृभ्य निष्कृनि कुरु। येऽस्मत्कुले मातृवंशे वान्धवा दुर्गति गताः। त्वदर्शनात् स्पर्शनाच्च स्वर्गति यान्तु तेऽक्षयाम्। ऋणत्रयं मया दत्तं गयामागत्य वृक्षराट्। त्वत्प्रसादान् महापापाद्विमुक्तोऽहं भवार्णवात। आम्रशेचनम्। आम्रं ब्रह्म समुद्भूतं सर्वदेव मयं विभुम्। विष्णुरुपं प्राथयामि पितृणां चेवमुक्तये।

सीताकुण्ड वालु का पिण्ड।

मन्त्र—सिकतायाः ददौसीता पिण्ड सोभाग्य हेतवे। गयामागत्य-रामेण तीर्थे दशाश्वमेधिके। सिकतायाः ददौ सीता पिण्डं पितृ विमुक्तये। गया मागत्य। सिकतायाः ददौ सीता पिण्ड मातृ विनूक्तये। गयामागत्य—

अक्षयवट शय्यादान।

ॐ अद्य गोत्रः शर्म्मा सपत्नीकोऽहं गोत्राणां समस्तपितृणां अमुकामुक शर्म्मणां यथा संभवं सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां वैकुण्ठ लोक सुख प्राप्तिकामः अक्षयवट शय्यादानमहं करिष्ये। सोपकरणशय्यावैनमः।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

देयब्राह्मनाय नमः ३ । ततः विष्णु देव को पूजन कर शय्या संकल्प कर ब्राह्मण को दें। अद्यामुक समस्त पितृणांपापक्षय पूर्वक वैकुण्ठ लोके विष्णु सायुज्यावाप्तये इमां शय्यां ईशानादि कोण चतुष्टय स्थापन क्रमेण-घृत कुंभ गोधुम कुंभ जल कुंभ मधु कुंभ समेतां हंस तली प्रच्छन्नां शुभ्र गंडोपधानिकां प्रच्छादनपटास्तृतां सप्त धान्य युतां ताम्बूल एला लवंग कर्पूर युतां सुगन्ध परिमल भोग्यवस्तु चन्दनागरु दीपिकोपानच्छत्र चामरा-सनयुतां भोजन भाजन जलपात्र पंच वर्ण वितानां केश प्रसाधनांऽजन शलाकापुष्प मालादि युतां अमुक गोत्राय अमुक शर्मणेसुपूजिताय सालं-कृताय सपत्नीकाय ब्राह्मणाय तुभ्यमह सम्प्रददे। ततः प्रार्थना। यथा न कृष्णशयनं शूभ्यं-सागर जातया। तथा शय्या ममाप्यस्त्वंशून्या जन्मनि जंन्मनि। कृतैतन्शय्यादान क्रर्मणः सांगतासिद्वयर्थो इमां दक्षिणां यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। ततः ब्राह्मण भोजन संकल्पः। ततः अक्षयवट पूजन प्रार्थना।

अक्षयवट नमस्कार :—

एकार्णवेवटस्याग्रे यः शेते योग निद्रया।
बालरूपधरन्तस्मै नमस्ते योग सा पने॥
संसार वृक्षशस्यायाऽशेषपापक्षयाय च।
अक्षय ब्रह्म दात्रे च नमो वृक्षवराय कौ॥

—:o:—

Digitization by American Academy of Indic Studies (AAIS)(USA)

निम्नोक्त शेष पितरों के नाम के अन्त में नीचे लिखे संस्कृत शब्द जोड़ कर पिण्डदान तथा तर्पण करें :—

स्त्री-धर्मे पत्नी, बेटा-पुत्र, बेटी-पुत्री, भाई-भ्रातः, भाई की स्त्री-भ्रातृ पत्नी, चचा-पितृव्य, चचा की स्त्री-पितृव्ये, दादा के भाई-पितामह-भ्रातः, दादा के भाई कीस्त्री-पितामहभ्रातृपत्नी, प्रदादा के भाई-प्रपितामह-भ्रातः, प्रदादा के भाई की स्त्री-प्रपितामहभ्रातृपत्नी, बहन-भगिनी, बहनोई-आवुत, फूआ-पितृस्वसः, मौसी-मातृस्वसः, ससुर-स्वसुर, सास-स्वश्रू, सार-श्याल, सार की स्त्री-श्याल पत्नी, मामु-मातुल, मामी-मातुलानी, गुरु-गुरो, मित्र-मित्र।

विद्वान् लोग और भी अन्य पितरों को पिण्ड दान तथा तर्पण निम्नोक्त श्लोक से करावें :—

यायां गया शिरशि फल्गु तीर्थे पार्वण श्राद्धे अमुक गोत्र अमुक शर्मन् एषते पिण्ड स्वधा।

पुस्तक प्राप्ति एक मात्र स्थान :—

(१) रामानुजाचार्य मठ, देवघाट, गया।

(२) मगध शुभंकर प्रेस, रामसागर नयो सड़क, गया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गयातीर्थ के विशेष दर्शनीय स्थान :—

विष्णुपद, गायेश्वरी देवी, शंकरा चार्य मठ, कृष्णद्वारिका, राम मन्दिर, सत्यनारायण मन्दिर, दातात्रेय मन्दिर, नागनथईया भगवान कृष्ण, श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर, रामानुजाचार्य मठ देवघाट, मंङ्गलागौरी वागीश्वरी, पिताम्हेश्वर, मार्कण्डेय, ब्रह्मयोनी, सूर्य मन्दिर, शीतलाजी, जनार्दन भगवान, बुद्धगया।

गया श्राद्ध करने वाले यात्रियों से नम्र निवेदन ?

ब्रह्मप्रकल्पितान्विप्रान हव्य कव्यादि नार्चयेत।
तैस्तुष्टस्तोषिताः सर्वाः पितृभिः सहदेवता ॥

ब्रह्मा से पूजित गयापाल पण्डो को संतुष्ट करने से पितर और देवता सन्तुष्ट होते हैं। अतः अपने तीर्थगुरु गयापाल पण्डों को न भूलें उन्हें खोजकर यथाशक्ति श्रद्धा से विधिवत् उनको पूजा करें।

श्री भगवान बुद्ध।

Government Press

पुस्तक मिलने का स्थान :—
मगध शुभंङ्कर प्रेस, रामसागर, नयी सड़क, गया।